जनसत्ता

15 जनवरी, 2024

महंगाई की मार

तमाम कोशिशों के बावजूद महंगाई पर काबू पाना सरकार के लिए कठिन बना हुआ है। पिछले महीने खाद्य वस्तुओं की खुदरा महंगाई 9.53 फीसद पर पहुंच गई। इसके पिछले महीने यह 8.70 फीसद पर थी, जबकि पिछले वर्ष की समान अवधि में यह 4.90 फीसद दर्ज की गई थी। यह महंगाई दर दालों, सब्जियों और मसालों की कीमतों में अत्यधिक वृद्धि की वजह से दर्ज हुई है। हालांकि अनाज और खाद्य तेलों में मुद्रास्फीति कुछ कम हुई है। भारतीय रिजर्व बैंक इस स्थिति के लिए पहले से तैयार था। इसीलिए उसने बैंक दरों में कोई बदलाव करने से परहेज किया। उसका मानना है कि सब्जियों और दालों की कीमतों में इस तरह के उतार-चढ़ाव आते रहेंगे और इसके लिए पहले से तैयार रहने की जरूरत है। रिजर्व बैंक की कोशिश रही है कि महंगाई को पांच फीसद से नीचे स्थिर रखा जाए। इससे आर्थिक विकास को गति मिलेगी। मगर इस मामले में उसे कामयाबी नहीं मिल पा रही है। हालांकि इसके उलट, भारतीय अर्थव्यवस्था के दुनिया में सबसे बेहतर यानी सात फीसद से ऊपर रहने का अनुमान लगाया जा रहा है।

आर्थिक आंकड़ों के गणित में कुछ बातें बहुत सारे लोगों की समझ से परे या फिर विरोधाभासी लगती हैं। महंगाई के साथ औद्योगिक उत्पादन के आंकड़े भी आए हैं, जिसमें तेईस में से सत्रह क्षेत्रों का प्रदर्शन निराशाजनक देखा गया है। औद्योगिक उत्पादन अपने पिछले आठ महीने के सबसे निचले स्तर पर यानी 2.4 फीसद दर्ज हुआ है। इसके पीछे उच्च आधार प्रभाव के साथ-साथ उपभोक्ता वस्तुओं और विनिर्माण गतिविधियों में शिथिलता को कारण माना जा रहा है। इसके बावजूद आर्थिक विकास दर में तेजी बताई जा रही है। जब औद्योगिक उत्पादन निराशाजनक हो, उपभोक्ता वस्तुओं की खपत कम हो रही हो, व्यापार घाटा और राजकोषीय घाटा पाटना चुनौती बना हुआ हो, तब भी विकास दर ऊंची बनी रहे, तो इस पर हैरानी स्वाभाविक है। संतुलित विकास के लिए महंगाई दर का नीचे रहना, औद्योगिक उत्पादन का संतोषजनक दर से वृद्धि करना, रोजगार के नए अवसर सृजित होते रहना और बाजार में पूंजी का प्रवाह संतुलित रहना बहुत जरूरी होता है। महंगाई, खासकर खाने-पीने और रोजमर्रा इस्तेमाल की वस्तुओं की खुदरा कीमतों में बढ़ोतरी, आर्थिक विकास पर नकारात्मक असर डालती है।

कोरोनाकाल के बाद कारोबारी गतिविधियां सामान्य ढंग से चल तो पड़ीं, मगर रोजगार और आय के स्तर पर बहुत सुधार नहीं देखा गया। लोगों की कमाई बढ़ नहीं पा रही है। जिन लोगों के रोजगार छिन गए, उनमें से बहुत सारे आज भी खाली हाथ बैठे हैं। इस तरह सबसे अधिक बुरा प्रभाव लोगों की क्रय शक्ति पर पड़ा है। इसकी वजह से कुछ त्योहारी मौसमों को छोड़ दें, तो उपभोक्ता वस्तुओं के बाजार में रौनक अभी तक स्वाभाविक ढंग से नहीं लौटी है। मगर खाने-पीने की वस्तुओं की कीमतों में बढ़ोतरी कृषि उत्पादों के भंडारण, बाजारों तक उनकी सुगम पहुंच और विक्रय नीतियों में असंतुलन की वजह से अधिक देखी जाती है। यह मौसम आमतौर पर सब्जियों और फलों के उत्पादन के लिहाज से अच्छा माना जाता है। मौसम भी आमतौर पर अनुकूल ही रहा है। फिर भी सब्जियों की कीमतों में सत्ताईस फीसद से अधिक बढ़ोतरी देखी गई, तो खेतों से उपभोक्ता तक उनके पहुंचने में आने वाली दिक्कतों को दूर करने पर विचार की जरूरत है। महंगाई की मार से बचाने के लिए लोगों की क्रयशक्ति बढ़ाने के उपाय जुटाना इस वक्त की बड़ी चुनौती है।

खतरे पर पर्दा

किसी संक्रामक या जानलेवा बीमारी से निपटने के लिए सबसे जरूरी है उसके प्रसार और असर पर नजर रखना, ताकि उसकी प्रकृति का अध्ययन किया जा सके और उसी मुताबिक उस पर काबू पाने के उपाय जुटाए जाएं। हैरानी की बात है कि देश की राजधानी दिल्ली में एक ओर आम लोगों के लिए डेंगू का जोखिम बढ़ता जा रहा है और दूसरी ओर संबंधित महकमे इसकी हकीकत को छिपाने की कोशिश में लगे हैं। दिल्ली में हर साल डेंगू के बढ़ते जोखिम और इसकी वजह से लोगों की मौत की खबरें चिंता का कारण बनती रही हैं। हाल ही में आई एक खबर के मुताबिक भी बीते वर्ष उन्नीस लोगों की मौत डेंगू की वजह से हो गई। मगर हैरानी की बात है कि इस जानलेवा बीमारी की चपेट में आने और मरने वालों के वास्तविक आंकड़ों को सार्वजनिक करने को लेकर दिल्ली नगर निगम ने एक तरह की चुप्पी ओढ़ ली थी। जबकि यह रवैया किसी भी बीमारी के बेलगाम हो जाने का सबसे बड़ा कारण बन सकता है।

यह बेवजह नहीं है कि अब दिल्ली नगर निगम पर सवाल उठने शुरू हो गए हैं कि आखिर समय-समय पर मच्छरजनित बीमारियों या खासकर डेंगू के दंश से पीड़ित और मरने वालों को लेकर दर्ज आंकड़े क्यों नहीं जारी किए गए और कई महीनों तक इससे संबंधित आंकड़ों को क्यों छिपाया गया! खबरों के अनुसार, पिछले वर्ष अगस्त के बाद से दिल्ली नगर निगम ने अपनी हर सप्ताह जारी होने वाली मच्छरजनित रोगों के आंकड़ों वाली रपट जारी नहीं की है, जबकि 2023 में डेंगू के करीब सवा नौ हजार मामले प्रकाश में आए और इससे कुल उन्नीस लोगों की जान चली गई। मच्छरजनित बीमारियों या फिर अन्य संक्रामक रोगों के फैलाव तथा असर पर नजर रखना और उससे संबंधित रपट जारी करना नगर निगम का दायित्व है। इससे बीमारियों की रोकथाम में मदद ही मिलती है। मगर इस मामले में हकीकत पर पर्दा डालने की कोशिश हो रही है और ऐसे आरोप सही हैं, तो क्या यह आम लोगों की सेहत से खिलवाड़ नहीं है!

यह एक सामान्य तथ्य है कि अगर किसी बीमारी की प्रकृति को शुरुआती दौर में ही ठीक से समझने की कोशिश नहीं की जाती, तो उसे पांव पसारने का मौका मिलता है। इस बात की आशंका भी खड़ी हो सकती है कि वह बीमारी गंभीर शक्ल लेकर बेलगाम हो जाए। कोरोना के महामारी में तब्दील हो जाने और उसके नतीजों के ब्योरे आज भी लोगों को दहला देने के लिए काफी हैं। गौरतलब है कि कोरोना महामारी के प्रकोप के दौरान उसकी चपेट में आने वाले मरीजों से संबंधित सभी आंकड़ों पर नजर रखी गई थी और उससे इसके असर का सटीक अध्ययन करने में काफी मदद मिली। आज कोरोना का असर नगण्य है, तो इसमें इससे जुड़े सभी पहलुओं को देख-समझ कर उसी मुताबिक इससे निपटने के उपाय करने की सबसे बड़ी भूमिका रही। अब अगर डेंगू के मामले में दिल्ली नगर निगम पर सच्चाई छिपाने के आरोप लग रहे हैं तो इसकी जिम्मेदारी तय होनी चाहिए कि यह कौन और क्यों कर रहा है। यह ध्यान रखने की जरूरत है कि दिल्ली में एक समय डेंगू के दंश से भयावह हालात पैदा हो चुके हैं। अगर इसकी वास्तविक तस्वीर पर नजर नहीं रखी गई तो कभी भी इसके गंभीर खतरे झेलने की स्थिति खड़ी हो सकती है।

कल्पमेधा

हर सुधार का कुछ न कुछ विरोध अनिवार्य है। परंतु विरोध और आंदोलन, एक सीमा तक समाज में स्वास्थ्य के लक्षण होते हैं।

– महात्मा गांधी

लक्षद्वीप का रणनीतिक महत्त्व

ब्रह्मदीप अलूने

लक्षद्वीप की रणनीतिक स्थिति तथा चीन और क्षेत्रीय बाधाओं के प्रति इसकी संवेदनशीलता इसे एक समर्पित रक्षा द्वीप में बदलने की जरूरत रेखांकित करती है। मगर इसे पर्यटन केंद्र के तौर पर उभारने की कोशिशें सुरक्षा चुनौतियों को बढ़ा सकती हैं। इसका विरोध यहां के नागरिक कर रहे हैं। उनका कहना है कि ऐसा करने से उनके खूबसूरत द्वीपों की अनूठी संस्कृति और परंपरा खत्म हो जाएगी।

हिंद महासागर और अरब सागर से लगे कई देशों में चीन ने आधारभूत परियोजनाओं और बंदरगाहों का निर्माण कर भारत की सामरिक चुनौतियों को बढ़ा दिया है। पिछले कुछ दशक में चीन ने तेजी से अपनी नौसैनिक क्षमताओं का आधुनिकीकरण किया है। उसका मुकाबला करने के लिए भारत ने भी पिछले कुछ वर्षों में अपनी नौसेना और तटरक्षक बलों को मजबूत किया है। इसके साथ ही भारत ने अपनी समुद्री सुरक्षा क्षमताओं को बढ़ाने के लिए जिन केंद्रों को चिह्नित किया है, लक्षद्वीप उसमें बेहद अहम है।

लक्षद्वीप छत्तीस द्वीपों का एक समूह है और इसका कुल क्षेत्रफल बत्तीस वर्ग किलोमीटर है। यह अरब सागर में करीब तीस हजार वर्ग मील तक फैला हुआ है। अरब सागर की सीमा यमन, ओमान, पाकिस्तान, ईरान, भारत और मालदीव को छूती है। यह एक ऐसा समुद्री क्षेत्र है, जो कई अहम 'शिपिंग लेन' और बंदरगाहों को जोड़ता है, इसलिए अंतरराष्ट्रीय व्यापार के लिए यह एक अहम रास्ता बन जाता है। अरब सागर तेल और प्राकृतिक गैस का बड़ा भंडार है और इस क्षेत्र में ऊर्जा का अहम संसाधन भी है।

अरब सागर में जहाजों की किसी भी गतिविधि पर नजर रखने के लिए लक्षद्वीप द्वीप समूह को एक सुविधाजनक स्थान के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है। यह भी दिलचस्प है कि भारत के विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र का आकार बहुत विशाल है तथा इसमें लक्षद्वीप भी शामिल है। विशिष्ट आर्थिक क्षेत्र किसी भी देश के समुद्री तट से दो सौ समुद्री मील यानी 370 किलोमीटर की दूरी तक होता है। लक्षद्वीप के कारण भारत को समुद्र के बड़े क्षेत्र पर अधिकार मिल गया है, जिससे दूर-दूर तक गुजरने वाले जहाजों की आवाजाही पर नजर रखी जा सकती है। लक्षद्वीप के कवरत्ती द्वीप पर भारतीय नौसैनिक अड्डा है। इसके साथ ही भारत अब लक्षद्वीप पर एक मजबूत अड्डा तैयार कर रहा है, जिससे चीन से मुकाबला करने में बड़ी मदद मिलने की उम्मीद है।

भारत की कुल तटीय सीमा सात हजार पांच सौ सोलह किलोमीटर की है। यह गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश, ओड़ीशा तथा पश्चिम बंगाल राज्यों के साथ-साथ संघ-शासित प्रदेशों दमन और दीव, लक्षद्वीप, पुदुचेरी तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह तक फैली हुई है। भारत की दक्षिण पश्चिमी सीमा पर अरब सागर और सह्याद्रि पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित केरल राज्य भारत की सामरिक सुरक्षा का बड़ा केंद्र माना जाता है। कोच्चि केरल का बंदरगाह नगर है, जो लक्षद्वीप सागर से लगा हुआ है। कोच्चि को अरब सागर और हिंद महासागर का एक महत्त्वपूर्ण प्रवेश द्वार माना जाता है। यह कृषि उत्पादों, औद्योगिक वस्तुओं और कच्चे माल सहित राज्य के आयात और निर्यात का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा संभालता है। यह बहुत प्राचीन काल से दुनिया का एक महत्त्वपूर्ण बंदरगाह शहर रहा है, जहां मध्य पूर्व और यूरोप सहित दुनिया के विभिन्न हिस्सों से व्यापारी आते रहे हैं। कोच्चि बंदरगाह नियमित जहाजरानी सेवाओं के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय बाजारों से जुड़ा हुआ है।

केरल के तिरुवनंतपुरम में विक्रम साराभाई अंतरिक्ष केंद्र स्थित है। यहां उपग्रह प्रक्षेपण यानों और संबंधित प्रौद्योगिकियों की डिजाइनिंग और विकास किया जाता है। राकेट प्रौद्योगिकी के डिजाइन और विकास के लिए जिम्मेदार इसरो का यह प्रमुख केंद्र वैमानिकी, अंतरिक्ष आयुध, संरचना, अंतरिक्ष भौतिकी और प्रणाली विश्वसनीयता के क्षेत्र में सक्रिय अनुसंधान और विकास करता है। इसलिए इन केंद्रों की सुरक्षा के लिए लक्षद्वीप द्वीप समूह पर भारत की सामरिक क्षमता का मजबूत होना बेहद जरूरी है।

लक्षद्वीप द्वीप समूह के पास स्थित नाइन डिग्री चैनल, फारस की खाड़ी से पूर्वी एशिया की ओर जाने वाले जहाजों के लिए सबसे सीधा मार्ग है। इस चैनल का उपयोग यूरोप, मध्यपूर्व और पश्चिमी एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया और सुदूर पूर्व से आने-जाने वाले सभी व्यापारियों द्वारा किया जाता है। युद्धकाल में, भारत चैनल को अवरुद्ध कर और दुश्मन की आपूर्ति लाइनों को काट सकता है। लक्षद्वीप द्वीप समूह की भौगोलिक परिस्थितियां भारत की सुरक्षा चिंताओं को भी बढ़ाती हैं, इसलिए भी इस पर निगरानी तंत्र विकसित किया जा रहा है।

मालदीव से लक्षद्वीप बेहद निकट है। मालदीव भारत-विरोधी केंद्र के रूप में उभर रहा है। वह चीन के प्रभाव में तो है ही, वहां चरमपंथी गतिविधियां भी बढ़ी हैं। हाल के वर्षों में सऊदी अरब और पाकिस्तान से मिलने वाली सहायता के साथ-साथ मजहबी कट्टरपंथ का निर्यात भी इन देशों से हो रहा है। दक्षिण एशियाई देशों से आइएसआइएस में जिहादी भर्तियों का सर्वाधिक प्रतिशत मालदीव से रहा है। मालदीव के सैकड़ों द्वीप निर्जन हैं और वहां चरमपंथी ताकतों के मजबूत होने का खतरा बना रहता है, जिसका सीधा असर भारत की आंतरिक सुरक्षा पर पड़ने का अंदेशा बना रहता है। लक्षद्वीप को उन्नत करके मालदीव, मारीशस, सेशेल्स, श्रीलंका, पाकिस्तान और म्यांमा जैसे पड़ोसी देशों में चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला करने के लिए किया जा सकता है।

चीन भारत से लगभग तीन सौ किमी दूर श्रीलंका में हंबनटोटा बंदरगाह शहर का निर्माण कर रहा है। इसी तरह, यह मालदीव के कई द्वीपों को नियंत्रित करता है और वहां एक हवाई अड्डा बना रहा है। हंबनटोटा से चेन्नई, कोच्चि और विशाखापत्तनम बंदरगाहों का फासला करीब नौ सौ से पंद्रह सौ किलोमीटर है। भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के लिए अति महत्त्वपूर्ण सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र श्रीहरिकोटा भी करीब ग्यारह सौ किलोमीटर की दूरी पर ही है। चीनी नौसेना की संख्या और गतिविधियां जिस तरह से हिंद महासागर क्षेत्र में बढ़ी हैं, उससे निपटने और नए तरीके से निगरानी तंत्र स्थापित करने के लिए भारत के लिए लक्षद्वीप का महत्त्व और ज्यादा बढ़ गया है।

कोच्चि से साढ़े छह सौ किलोमीटर दूर भारत के पश्चिमी तट पर कर्नाटक के कारवार में एक नौसैनिक अड्डे का निर्माण किया जा रहा है। कारवार नौसेना बेस पर 'प्रोजेक्ट सीबर्ड' देश की सबसे बड़ी नौसैनिक बुनियादी ढांचा परियोजना है, जिसका उद्देश्य युद्धपोतों के बेड़े का समर्थन और रखरखाव प्रदान करना है। यह पड़ोसी देशों के अधिकांश लड़ाकू विमानों की पहुंच से बाहर है और फारस की खाड़ी और पूर्वी एशिया के बीच दुनिया के सबसे व्यस्त शिपिंग मार्ग के बहुत करीब स्थित है। आइएनएस कदंबा भारतीय नौसेना का एक एकीकृत रणनीतिक नौसैनिक अड्डा है, जो भारत के पश्चिमी तट पर कर्नाटक में कारवार के पास बिनगा खाड़ी में स्थित है। यह वर्तमान में तीसरा सबसे बड़ा भारतीय नौसैनिक अड्डा है और इसका पूरा विस्तार होने के बाद यह पूर्वी गोलार्ध में सबसे बड़ा नौसैनिक अड्डा होगा।

लक्षद्वीप द्वीप समूह के आसपास के लैगून और विशेष आर्थिक क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण मत्स्य पालन और खनिज संसाधन हैं, जो अत्यधिक आर्थिक महत्त्व के हैं। मारीशस के अगलेगा द्वीप को भारत विकसित कर रहा है। लक्षद्वीप के भारत और अगलेगा द्वीप के बीच एक संपर्क बिंदु बनने से हिंद महासागर क्षेत्र में भारत को चीन पर सामरिक बढ़त मिल जाएगी।

लक्षद्वीप की रणनीतिक स्थिति तथा चीन और क्षेत्रीय बाधाओं के प्रति इसकी संवेदनशीलता इसे एक समर्पित रक्षा द्वीप में बदलने की जरूरत रेखांकित करती है। मगर इसे पर्यटन केंद्र के तौर पर उभारने की कोशिशें सुरक्षा चुनौतियों को बढ़ा सकती हैं। इसका विरोध यहां के नागरिक कर रहे हैं। उनका कहना है कि ऐसा करने से उनके खूबसूरत द्वीपों की अनूठी संस्कृति और परंपरा खत्म हो जाएगी। पर्यटन से तस्करी और इस स्थान की टोह लिए जाने का अंदेशा बना रहेगा। चीन और पाकिस्तान भारत के सुरक्षा की दृष्टि से संवेदनशील इलाकों में ऐसा पहले भी करते रहे हैं।

सुख-दुख का साझा संसार

सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

दुनिया मेरे आगे

दोस्ती एक अनोखा और महत्त्वपूर्ण रिश्ता है, जो हमारे जीवन में खुशी, समर्थन और अपनेपन का अहसास लाता है। यह एक ऐसा बंधन है, जो विश्वास, प्यार, समझ और साझा अनुभवों पर बना है। पूरे इतिहास में दोस्ती को मानव अस्तित्व के अभिन्न अंग के रूप में देखा गया है। मित्रता को दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच विश्वास, आपसी स्नेह, साझा हितों और समझ पर आधारित आपसी रिश्ते के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। यह समय के साथ साझा अनुभवों, मूल्यों और भावनात्मक समर्थन के माध्यम से बनता है। दोस्ती के सबसे आकर्षक पहलुओं में से एक इसके द्वारा प्रदान किया जाने वाला समर्थन और प्रोत्साहन है। मित्र कठिन समय में एक-दूसरे के लिए मौजूद रहते हैं, सुनने के लिए कान, रोने के लिए कंधा और सांत्वना के शब्द देते हैं। अरस्तू ने कहा था, 'गरीबी और जीवन के दुर्भाग्य क्षणों में सच्चे दोस्त एक निश्चित आश्रय जैसे होते हैं।' यह उद्धरण चुनौतीपूर्ण समय के दौरान आराम और समर्थन के स्रोत के रूप में दोस्ती के महत्त्व पर जोर देता है। सच्चे दोस्त हर सुख-दुख में एक-दूसरे के साथ खड़े रहते हैं, सुरक्षा और आश्वासन की भावना प्रदान करते हैं।

दोस्ती हंसी और खुशी जोड़कर हमारे जीवन को समृद्ध बनाती है। दोस्तों के साथ खुशी के पल साझा करना और उपलब्धियों का जश्न मनाना ऐसी यादें बनाता है जो जीवन भर याद रहती हैं। जैसा कि राल्फ वाल्डो एमर्सन ने खूबसूरती से कहा है, 'एक दोस्त बनाने का एकमात्र तरीका एक दोस्त बनना है।' यह दोस्ती की पारस्परिक प्रकृति पर प्रकाश डालता है, जहां दोनों पक्ष रिश्ते में योगदान देते हैं और एक-दूसरे के संपर्क से खुशी प्राप्त करते हैं। सच्चे दोस्त एक-दूसरे में श्रेष्ठता लाते हैं और एक सकारात्मक माहौल बनाते हैं। अच्छे दोस्त हमें वैसे ही स्वीकार करते हैं जैसे हम हैं। वे हमारी खूबियों, खामियों और विचित्रताओं में कोई भेद नहीं करते हैं। हेनरी नूवेन ने कहा है, 'जब हम ईमानदारी से खुद से पूछते हैं कि हमारे जीवन में कौन-सा व्यक्ति सबसे ज्यादा मायने रखता है, तो हम अक्सर पाते हैं कि ये वही लोग हैं, जिन्होंने सलाह, समाधान या इलाज देने के बजाय, हमारे दर्द और स्पर्श को साझा करने का विकल्प चुना है।'

दोस्ती समुदाय और जुड़ाव की भावना पैदा करके हमारे जीवन को बेहतर बनाती है। मित्र हमें एक सहायता प्रणाली, अपनेपन की भावना और व्यक्तियों की एक कड़ी प्रदान करते हैं जो हमारे जीवन को समृद्ध बनाते हैं। राबर्ट लुईस स्टीवेंसन ने ठीक ही कहा है कि एक मित्र एक उपहार है, जो आप स्वयं को देते हैं। दरअसल, सच्चे दोस्त अमूल्य होते हैं और हमारे अनुभवों और भावनाओं को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह दोस्ती व्यक्तिगत विकास और आत्म-खोज को बढ़ावा देती है। दोस्त अलग-अलग दृष्टिकोण पेश करते हैं, हमारे विचारों और विश्वासों को चुनौती देते हैं और हमें एक व्यक्ति के रूप में विकसित होने में मदद करते हैं। वे हमारे कार्यों में हमारा समर्थन करते हैं और हमें अपना सर्वश्रेष्ठ संस्करण बनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। जैसा कि विलियम शेक्सपियर ने कहा था, 'एक दोस्त वह है जो आपको वैसे ही स्वीकार करता है जैसे आप थे, हैं और रहेंगे।' यह उद्धरण दोस्ती की परिवर्तनकारी प्रकृति को खूबसूरती से व्यक्त करता है।

देखा जाए तो दोस्ती मानसिक और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देती है। मजबूत सामाजिक संबंध और दोस्तों के साथ सार्थक संबंध बेहतर मानसिक स्वास्थ्य और समग्र कल्याण से जुड़े हुए हैं। मित्र भावनात्मक समर्थन, सहानुभूति और सहयोग प्रदान करते हैं, जो जीवन की चुनौतियों से निपटने के लिए आवश्यक हैं। डेविड टायसन जेंट्री ने एक बार कहा था कि एक सच्चा दोस्त सभी आशीर्वादों में सबसे बड़ा है, और जिसे हासिल करने के लिए हम सबसे कम परवाह करते हैं। दोस्ती के अथाह मूल्य और हमारे मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर इसके सकारात्मक प्रभाव की अहमियत को समझा जा सकता है। मित्रता मानव अस्तित्व का एक अनमोल और अमूल्य पहलू है। यह विश्वास और आपसी स्नेह से लेकर समर्थन और व्यक्तिगत विकास तक, दोस्ती हमारे अनुभवों और भावनाओं को आकार देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मित्रता की अनुपस्थिति अलगाव की भावना पैदा कर सकती है और दूसरों से जुड़ने में असमर्थता पैदा कर सकती है, जिससे हमारे आसपास के लोगों के साथ सार्थक संबंध बनाना मुश्किल हो जाता है।

किसी मित्र की अनुपस्थिति में व्यक्ति को जीवन की जटिलताओं से निपटना चुनौतीपूर्ण लग सकता है। किसी भरोसेमंद विश्वासपात्र के समर्थन और मार्गदर्शन के बिना हम दुनिया में अपनी जगह खोए हुए व्यक्ति के रूप में महसूस कर सकते हैं। घनिष्ठ मित्रता से मिलने वाले परिप्रेक्ष्य और अंतर्दृष्टि की कमी के कारण हमें महत्त्वपूर्ण निर्णय लेने में कठिनाई हो सकती है। किसी मित्र के सहारे के बिना हम जीवन की चुनौतियों से घिरा महसूस कर सकते हैं।

साइबर असुरक्षा

सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में मानव जाति आज इंटरनेट पर अत्यधिक निर्भर हो चुकी है। ई-कामर्स, ई-बैंकिंग, ई-शिक्षा, ई-कारोबार जैसे ढांचे इंटरनेट की दुनिया में ही हैं, लेकिन आज सबसे बड़ा सवाल है कि यहां सुरक्षा का तंत्र क्या है। सुनने और देखने में जरूर लगता है कि इंटरनेट सुरक्षित है, लेकिन वास्तव में ऐसा बिल्कुल भी नहीं है। आज सबसे ज्यादा खतरा यह है कि इंटरनेट के माध्यम से साझा की गई हमारी अपनी जानकारी गोपनीय नहीं रही। इसलिए कहा जा सकता है कि इंटरनेट पर बढ़ती हमारी निर्भरता और इस क्षेत्र में बढ़ते साइबर अपराध पूरी मानव जाति के लिए खतरा हैं।

बेशक इंटरनेट ने मानव के विकास में अहम भूमिका निभाई है, लेकिन इस दुनिया ने अपराध के भी नए 'अवसर' पैदा किए हैं। इनमें प्रमुख है साइबर अपराध। इस आभासी दुनिया में सबसे अधिक शिकार कम जागरूक लोग, महिलाएं और बच्चे होते हैं। बीते साल हमारे देश में ही एक नामचीन अभिनेत्री का 'डीपफेक' वीडियो बनाकर सबको चिंता में डाल दिया था और ऐसा ही प्रयास पहले एक बुल्ली नमक ऐप से भी किया गया जो विशेष तौर पर महिलाओं को निशाना बनाता था। हाल ही में हमने देखा कि किस तरीके से यूनाइटेड किंगडम में 'वर्चुअल बलात्कार' का मामला आया है। इसके अलावा, अमेरिका भी एक मामला आया है जो साइबर अपहरण से संबंधित है। इन दो घटनाओं ने एक बार फिर हमें इस बात को सोचने के लिए व्यवस्था की हम कैसे साइबर अपराध से निजात पाएं।

ऐसा नहीं है कि यह अपराध केवल व्यक्ति तक ही सीमित है। इसके शिकार बड़े-बड़े संगठन सार्वजनिक और निजी भी होते हैं, जहां पर कार्यरत कर्मचारियों का निजी डेटा चुराकर उसका अवांछित तरीके से प्रयोग किया जाता है। सरकारों ने इसे रोकने के लिए प्रयास किए हैं, लेकिन जो प्रयास किए गए वह अपेक्षा के मुताबिक परिणाम नहीं दे पाए। हमें इंटरनेट से जुड़े अपराधों पर हमें पुख्ता इंतजाम करने की आवश्यकता इसलिए भी है कि अब हम अधिक से अधिक डिजिटलीकरण की ओर बढ़ रहे हैं। हमारे पास दुनिया भर में तीसरे नंबर पर सर्वाधिक इंटरनेट उपभोक्ता हैं।

इंटरनेट की सार्वभौम पहुंच और सस्ता होना, बढ़ता अकेलापन, गैर सतर्कता जैसे कई कारण हैं, जो साइबर अपराधों की जड़ हैं। इसके अलावा, डिजिटल साक्षरता की कमी के कारण हम लोग इंटरनेट और कंप्यूटर को अधिक विश्वसनीय मानने लगे हैं और अपनी जीवन शैली से संबंधित हर जानकारी साझा कर देते हैं, जिसका साइबर अपराधी दुरुपयोग करते हैं। इंटरनेट पर जानकारी मांगते वक्त ज्यादातर अंग्रेजी भाषा का प्रयोग किया जाता है और हम बिना समझे ही उसे 'ओके' या 'यस' का विकल्प चुन लेते हैं।

साइबर सुरक्षा उपकरणों के लिए भारत आज भी अन्य देशों पर निर्भर है। आगे की राह यह है कि डिजिटल डाटा निजता की सुरक्षा जैसे कानून का बेहतर नियमन हों। 'प्राइवेसी पालिसी' यानी निजता की नीति से संबंधित मापदंडों पर जागरूकता बढ़ाने के साथ विभागों में अधिक तकनीकी दक्ष लोगों की नियुक्ति की जानी चाहिए। साइबर अपराध को अन्य अपराधों की तरह गंभीर समझा जाना चाहिए।

– सौरभ बुंदेला, भोपाल, मप्र

कृषि का अर्थ

भारत को एक कृषि प्रधान देश माना जाता है। आजादी के बाद देश के सकल घरेलू उत्पाद में कृषि की हिस्सेदारी साठ फीसद थी, जो विगत वित्तीय वर्ष में घटकर पंद्रह फीसदी हो चुका है। यह देश में बढ़ते शहरीकरण और औद्योगीकरण को दर्शाता है। भारत सहित पूरी दुनिया की आबादी बढ़ रही है। एक रपट के अनुसार 2050 तक दुनिया की आबादी दस अरब तक पहुंचने का अनुमान है, इससे वैश्विक स्तर पर खाद्यान्न की मांग में पचास फीसद तक बढ़ोतरी की संभावना है। यह भारत के लिए एक चुनौती और अवसर दोनों रूप में है। बढ़ती आबादी की वजह से कृषि क्षेत्र का रकबा घटता जा रहा है।

भारत में प्रति हेक्टेयर अनाज की उपज विकसित देशों की तुलना में बेहद कम है। कृषि क्षेत्र में अभी और शोध की आवश्यकता है, जिससे देश की उत्पादन क्षमता में वृद्धि हो सके। विकसित देशों की तुलना में हमारे देश के किसान तकनीक का इस्तेमाल काम करते हैं। भारतीय कृषक आज भी परंपरागत रूप से खेती करते है। खेती के लिए मानसून पर आश्रित रहना पड़ता है, उचित भंडारण के अभाव में लाखों टन अनाज प्रतिवर्ष बर्बाद हो जाता है। सरकार को सिंचाई की समुचित व्यवस्था, भंडारण एवं परिवहन की सुविधा बढ़ानी चाहिए। कृषि को एक उद्योग के रूप में विकसित करना चाहिए, ताकि किसानों की स्थिति में सुधार आ सके, और कृषि देश की अर्थव्यवस्था में अधिक योगदान दे सकें।

– हिमांशु शेखर, केसपा, गया

हिंसा का हासिल

'मणिपुर की आग' (संपादकीय, 12 जनवरी) पढ़ा। हिंसा की घटनाओं और खूनी संघर्ष का दौर आज भी जारी होना यह दर्शाता है कि शासन व प्रशासन व्यवस्थाओं को व्यवस्थित करने में नाकाम रहे हैं। अशांति और संघर्षों के बीच सामान्य जीवन यापन कितना कठिन होगा, सोच कर हैरत होती है। राज्य तथा केंद्र सरकार के सुस्त रवैये से स्पष्ट है कि या तो हिंसा रोकना सत्ता के बूते से बाहर है या फिर जानबूझ कर हिंसा की आग को हवा दे रही हैं। ऐसे में एक ही विकल्प के रूप में न्यायालय रह जाता है, जिसका संज्ञान ले व्यवस्थाओं को निर्देशित करना चाहिए। खौफजदा माहौल में जीवनदायिनी कारोबार कैसे चल पाता होगा? सवाल विचारणीय है सभी पक्षों को बिठा कर बातचीत से समाधान निकाला जा सकता है और निकालना होगा। आपस में लड़ते-मरते रहने से कुछ भी हासिल नहीं होने वाला है।

– हुकुम सिंह पंवार, इंदौर

जीत के बाद

बांग्लादेश में मुख्य विपक्षी और उसके सहयोगियों द्वारा बहिष्कार किए गए आम चुनावों में अवामी लीग पार्टी को भारी बहुमत मिलने के कुछ दिनों बाद शेख हसीना ने गुरुवार को पांचवीं बार बांग्लादेश के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ ली। ये उनका लगातार चौथा कार्यकाल और कुल मिलाकर पांचवां कार्यकाल है। हसीना के नेतृत्व में भारत और बांग्लादेश की सरकारों ने राजनयिक संबंधों को मजबूत करने के लिए काम किया है और उम्मीद की जानी चाहिए कि प्रधानमंत्री के रूप में उनका पांचवां कार्यकाल भारत के साथ संबंधों में मजबूती को सुनिश्चित करेगा।

– जहांगीर अली, मुंबई

चौपाल

किसी भी मुद्दे या लेख पर अपनी राय हमें भेजें। हमारा पता है : ए-8, सेक्टर-7, नोएडा 201301, जिला : गौतमबुद्धनगर, उत्तर प्रदेश

आप चाहें तो अपनी बात ईमेल के जरिए भी हम तक पहुंचा सकते हैं। आइडी है : chaupal.jansatta@expressindia.com